लोकप्रिय होते स्टेटिस फूल

अंजली चंदेल*, मीनाक्षी ठाकुर*, अंकुश बाजड़*, विकास सोनी* और **भव्य भार्गव***

स्टेटिस एक लोकप्रिय पुष्प है और इसका उपयोग बगीचे की सजावट तथा कर्तित फूल में किया जाता है। इनके सूखे फूलों का उपयोग इनडोर सजावट के लिए भी किया जाता है। स्टेटिस के फूल बॉर्डर, रॉक गार्डन एवं पॉट प्लांट्स के लिए भी उपयुक्त हैं। इसके फूल सफेद, गुलाबी, लैवेंडर, नीले, नारंगी, पीले आदि कई रंगों में मिल जाते हैं। पुष्पों को छाया वाली जगह पर सुखाकर आसानी से लंबे समय तक उनका रंग सुरक्षित रखा जा सकता है।

लंबे समय तक टिकाऊ एवं ताजगी से भरपूर बनाए रखने के लिए स्टेटिस लड़ी एवं पुष्पों का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा ताजे या सूखे कटे हुए फूलों के रूप में भी ये उपयुक्त होते हैं।

मृदा : किसी भी प्रकार की मिट्टी स्टेटिस के लिए उपयुक्त है। उपजाऊ और अच्छी तरह से सूखी रेतीली बलुई मिट्टी इसकी उपज के लिए सबसे उपयोगी है। इसे सूखी और पथरीली मिट्टी में भी आसानी से उगाया जा सकता है।

जलवायु: स्टेटिस धूप वाले स्थानों में पाया जाता है और तापमान की एक विस्तृत श्रृंखला के तहत पनपता है। बेहतर फूल के लिए ठंडी जलवायु अधिक उपयोगी होती है, और यह मध्य पर्वतीय क्षेत्रों जैसे हिमाचल, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर में मिलती है। इसे नम सर्दियों से सुरक्षा की आवश्यकता होती है। पौधों की अच्छी वृद्धि के लिए 24/16 डिग्री सेल्सियस (दिन/रात) का तापमान उपयुक्त होता है।

*पुष्प विज्ञान प्रयोगशाला, कृषि प्रौद्योगिकी विभाग, सीएसआईआर - हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर, हि.प्र.

प्रवर्धन

बीज: यह प्रवर्धन का सबसे प्रभावी तरीका है। स्टेटिस के बीज आकार में छोटे होते हैं (लगभग 10,000 बीज प्रति 28 ग्राम)। इसके अंकुरण के लिए 13 से 18 डिग्री सेल्सियस तापमान चाहिए। इसमें तकरीबन 10 से 15 दिन लगते हैं। नर्सरी को कम मात्रा में नाइट्रोजन उर्वरक से उपचारित किया जाता है। जब पौधे 4 से 5 सें.मी. की ऊंचाई तक पहुंच जाते हैं तो इन्हे मुख्य क्यारी में रोपा जाता है। बिजाई से रोपाई का अन्तर 3 से 4 सप्ताह का रहता है।

क्लम्प का विभाजन : स्टेटिस के बारहमासी पौधे वसंत ऋतु में क्लम्प विभाजन के माध्यम से भी प्रवर्धित किए जा सकते हैं। जल्दी स्थापन के लिए प्रत्येक भाग में कुछ जड़ों का होना आवश्यक होता है।

अपने स्टेटिस फूलों के खेत में कृषक

पुष्पों को सुखाने की प्रक्रिया

स्टेटिस के सूखे फूल एक वर्ष या उससे अधिक समय तक आकर्षक रहते हैं। सूखे फूलों का आकार बनाये रखने के लिए, इन्हें आधा खुलने पर काटा जाता है। कटे हुए फूलों को अच्छी हवादार जगह में नीचे की और झुका दिया जाता है या 1 से 2 सप्ताह के लिए कंटेनरों में खड़ा कर दिया जाता है। सूखे फूल वातावरण से नमी अवशोषित करने की क्षमता रखते हैं और नाजुक होते हैं अत: इन्हें सावधानीपूर्वक संभालने की आवश्यकता होती है।

कटाई के लिए तैयार फसल

रोपण का समय

समतल क्षेत्र: अगस्त - सितंबर

पहाड़ी क्षेत्र: मार्च - अप्रैल

रोपण की दूरी: कर्तित पुष्पों के उत्पादन के लिए, पौधों को 30 सें.मी. की दूरी पर रोपित किया जाता है।

खरपतवार नियंत्रण : स्वस्थ फसल के लिए स्टेटिस में 2 से 3 बार निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। पेंडीमेथलिन (1320 ग्राम/हैक्टर) + क्लोरोफिरॉन (4500 ग्राम / हैक्टर) / ऑक्साडाईजोन (1000 ग्राम/हैक्टर), खरपतवारनाशी भी प्रभावी हैं।

सिंचाई: प्रारंभिक अवस्था में स्टेटिस का वानस्पतिक विकास बहुत तेज होता है। वानस्पतिक विकास को पूरा करने और प्रवर्धन योग्य अवस्था में प्रवेश करने में लगभग 60 से 65 दिन लगते हैं। वृद्धि के सभी चरणों में मिट्टी में पर्याप्त मात्रा में आर्द्रता आवश्यक है। विकास के किसी भी स्तर पर नमी की कमी से सामान्य वृद्धि और फूल आने की क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

कीट एवं रोग

कटवर्म: यह पौधों को जमीनी स्तर पर प्रभावित करता है। पौधों पर 0.05% एंडोसल्फॉन स्प्रे प्रभावी होता है।

एफिड, माइट, मिलीबग एवं थ्रिप्स: ये कीट पत्तियों, कोमल टहनियों और फूलों की कलियों से रस चूस लेते हैं। इससे पत्ते और फूल विकृत हो जाते हैं। डाइमेथोएट @ 0.03% कीट नियंत्रण के लिए प्रभावी है।

डैम्पिंग ऑफ: यह रोग नर्सरी में पौधों पर लगता है और इससे पौधों की अचानक मृत्यु हो जाती है। 50 डिग्री सेल्सियस पर 30 मिनट के लिए गर्म पानी का उपचार या बाविस्टिन (0.1%) के साथ छिड़काव रोग की जाँच में प्रभावी है।

पोषण: पोषक तत्वों की मांग को पूरा करने के लिए स्टेटिस को संतुलित उर्वरकों की आवश्यकता होती है। रोपाई के 10 से 15 दिनों पहले अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद को 5 किग्रा/मीटर की दर से खेत में डालना चाहिए। उचित वृद्धि और पुष्पण के लिए प्रति 100 वर्ग मीटर, 1 कि.ग्रा. NPK का प्रयोग पर्याप्त होता है। नाइट्रोजन का आधा भाग, पूर्ण फॉस्फोरस एवं पोटेशियम को रोपाई से 3-4 दिनों पहले मिट्टी में मिला देना चाहिए और शेष नाइट्रोजन का आधा हिस्सा एक महीने बाद डालना चाहिए।

एंथ्रेक्नोज (Colletotrichum gleosporioides): पत्तियों, तनों और फूलों पर नेक्रोटिक धब्बे आ जाते हैं। बाविस्टिन @ 0.1% और डाइथेनएम-45 @ 0.2% स्प्रे, रोग को नियंत्रित करता है।

लीफ स्पॉट(Alternaria sp., Fusicladiumstaticis, Phyllosticta sp.): क्लोरोथालोनिल / 75% स्प्रे इस रोग में सबसे प्रभावी नियंत्रण देता है।

एस्टरयेलो (Chlorogenus callistephivar- californicus): संक्रमित पौधों में बौनापन, पत्तियों पर मोजेक और फूलों की अनुपस्थिति दिखाई देती है। बचाव के लिए क्यारियों को साफ रखना चाहिए। रोगग्रस्त पौधों को हटाना और रोगवाहकों को नियंत्रण में रखना उपयोगी है।

पुष्प डंडियों की कटाई: स्टेटिस के पुष्पों को पूरी तरह से खिलने पर ही कर्तित पुष्पों के रूप में काटा जाता है। तने के बेस के जितना निकट हो सके, कम कोण वाला कट दिया जाता है। 10 डंडियों का एक गुच्छा बनाने के बाद उन्हें नीचे की ओर लटका दिया जाता है।

उपज: कर्तित पुष्पों की पैदावार, खेती और रोपण के समय के साथ बदलती रहती है। अगस्त रोपण से लगभग 7-8 कर्तित फूल/पौधों प्राप्त किए जा सकते हैं।

पुष्प डंडियों का रखरखाव: कर्तित फूलों को 2 डिग्री सेल्सियस तापमान पर 2-3 सप्ताह तक संग्रहित किया जा सकता है। ताजा अवस्था में फूलों का जीवन 1-2 सप्ताह का होता है। ■